IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर जीवन

डॉ. तृप्ति उकास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय महाकोशल कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर, म.प्र.

सारांश

आज के साहित्य के केन्द्र में विभिन्न प्रकार के विमर्शों विशेष स्थान प्राप्त है। जिनमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श आदि आते हैं। इनके अतिरिक्त समाज की वह तीसरी धुरी भी आती है, जो समाज में उपस्थित तो है, परन्तु बड़ी ही चालाकी से उसे हाशिये पर ढ़केल कर उसके अस्तित्व को नकार दिया गया है। किन्नर समुदाय पौराणिक काल से हमारे साहित्य व समाज में उपस्थित हैं, परन्तु इस 'सभ्य' कहे जाने वाले समाज ने उन्हें कभी नहीं अपनाया, बल्कि उनकी पीड़ा को समझे जाने बिना हमेशा उनका मज़ाक ही उड़ाया है।

वास्तव में ''किन्नर'' शब्द पहले हिमाचल प्रदेश के किन्नौर निवासियों के लिए प्रयुक्त होता था, जिसे अब हिजड़ों के लिए व्यवहृत कर दिया गया है। समाज में दो प्रकार के लिंगियों को ही मान्यता मिली है- एक पुरूष और दूसरी स्त्री । इन दो आपस में विपरीत लिंगियों को ही सृष्टि का आधार माना जाता है, किन्तु समाज में एक लैंगिक विकलांग वर्ग भी उपस्थित है, जिसे हिजड़ा, उभयलिंगी, किन्नर, खुसरा, मौसी इत्यादि संबोधन दिए गए हैं।

ये हिजड़े किसी परिवार में बच्चे के जन्म के अवसर पर नाच, गा कर बधाईयाँ व आर्शीवाद देकर कुछ रूपये लेकरविदा हो जाते हैं। किन्नर एक तरफ भिक्षावृत्ति से जीवन यापन के लिए तो दूसरी तरफ वेश्यावृत्ति को अपनाने के लिए विवश होते हैं, क्योंकि इनके अस्तित्व को नकार दिए जाने के कारण समाज से लेकर सरकारें तक इनकी आर्थिक जरूरतों के बारे में नहीं सोचती। जीवन में ऐसे कई अवसर आते हैं, जब उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। हमारे गरिमामय संविधान में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि

जाति, धर्म और लिंग के आधार पर नागरिकों के साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा, परन्तु खुले-आम यह सब चलता रहता है।

मुख्य शब्द : विषय प्रवेश, किन्नर शब्द, समाज में किन्नर, हिन्दी साहित्य में किन्नर, भारतीय न्यायप्रणाली और किन्नर, उपसंहार।

समाज में भले ही आज भी किन्नर उपेक्षित व घृणित जीवन जी रहे हों परन्तु, संवेदनशील साहित्यकारों ने कुछ देर से ही सही लेकिन किन्नरों पर अपनी पूरी सहानुभूति व्यक्त की है। पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र की कहानियों में जिन 'लौंडेबाजों' का ज़िक्र आता है वे किन्नर ही हैं, परन्तु उग्र जी ने उन्हें कथाओं का मुख्य पात्र नहीं बनाया है। निराला के उपन्यास 'कुल्ली भाट' (1939) में हमें उभयलिंगी विमर्श के दर्शन होते हैं। शिव प्रसाद ंिसंह की कहानी- 'बहा वृत्ति' और 'बिन्दा महाराज' किन्नर विमर्श पर ही आधारित है। बहाववृत्ति का प्रमुख पात्र बिहारी लाल लैंगिक रूप से तो असमर्थ नहीं हैं, क्योंकि उसका भरा पूरा परिवार है पत्नी है, बेटी है और एक बेटा हरिया भी है। कहानी के प्रारम्भ में ही पाठक देखते हैं कि हरिया ने अपने पिता बिहारी को नाचने-गाने से रोकने के लिए लाठियों से पीटा है। पूरी कथा बिहारी के इसी औरताना स्वभाव के इर्द-गिर्द घूमती है। कहानी के अन्त में बिहारी साधू बन कर कीर्तन करता हुआ दिखता है और एक पात्र द्वारा दुत्कारा जाता है- ''तू साधू नहीं, महात्मा हो जा, फिर भी तेरा नाचना न छूटेगा। मर भी जाएगा, तब भी तेरी आदत न छूटेगी, तेरी आत्मा नाचेगी! भाग जा, दूर हो जा!''

वृन्दावन लाल वर्मा की एकांकी 'नीलकंठ' भी एक किन्नर पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है। मछिन्द्र मोरे द्वारा रचित नाटक 'जानेमन' में किन्नर समाज की समस्याओं को बहुत गहराई से उकेरा गया है।

किन्नर जीवन पर आधृत प्रमुख कहानियाँ त्रासदी (महेन्द्र भीष्म), रतियावन की चेली (ललित शर्मा), नेग (डॉ॰ लवलेश दत्त), पन्ना बा (गरिमा संजय दूबे), गलती जो माफ नहीं (पारस दासोत), खुश रहो क्लीनिक (चाँद दीपिका), हिजड़ा (श्री कृष्ण सैनी), संकल्प (विजेन्द्र प्रताप सिंह) आदि हैं। इन सभी कहानियों में किन्नर जीवन के तिरस्कार, घृणा, उपेक्षा व जिजीविषा के लिए संघर्ष को चित्रित किया गया है। रचनाकारों ने महानगरों की गन्दी बस्तियों में जीवन यापन के लिए विवश किन्नरों की दयनीय स्थिति, सामाजिक उपेक्षा, घृणा, संवेदनाओं व भावनाओं का यथार्थ चित्रण किया है।

शिव प्रसाद सिंह की कहानी 'बिन्दा महाराज' ऐसे किन्नर की कहानी है, जो अपनों के मोह में पड़ा अन्त समय तक अपनी दुर्दशा करवाता रहता है। माता-पिता, भाई और भाई के बेटे करीमा पर जान छिड़कता

है, परन्तु माता-पिता के गुज़र जाने और भाई के द्वारा केवल तिरस्कार और अपमान मिलने के कारण उसकी सारी ममता करीमा पर सिमट जाती है। एक समय परिस्थितियाँ ऐसा मोड़ लेती हैं, कि बिन्दा केा सब छोड़ कर गाँव-गाँव भटकना और नाच-गा कर गुजर करना पड़ता है। एक गाँव में दीपू मिसिर के बेटे के प्रति ममत्व जागृत होता है, परन्तु अचानक बच्चे की मृत्यु हो जाने से लोग बिन्दा को डायन कहने लगते हैं। स्वयं के प्रति लोगों की ऐसी सोच के कारण बिन्दा महाराज धीरे-धीरे बच्चों के प्रति उदासीन हो जाते हैं।

'खलिक अहमद बुआ' राही मासूम रजा द्वारा रचित ऐसे किन्नर की कथा है, जिसे प्रेम के बदले धोखा मिलता है, जिससे वह घोर अकेलेपन से घिर जाती है।

किन्नर जीवन के त्रासदी को कुसुम अंसल ने अपनी कहानी 'ई मुर्दन के गाँव' में मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। बीलू, सिद्धार्थ तथा नीलिमा अच्छे दोस्त हैं, परन्तु अपने स्त्रैण स्वभाव के कारण बीलू को नीलिमा के साथ खेलना अधिक भाता है। किन्नर होने के कारण धीरे-धीरे उस पर पाबन्दियाँ बढ़ती जाती हैं, जिससे वह विद्रोही हो जाता है और अंततः माता-पिता से दूर विदेश में मौसी के पास भेज कर उसका बचपन उससे छीन लिया जाता है।

कादम्बरी मेहरा की कहानी 'हिजड़ा' एक ऐसी लड़की की कहानी है जो, परिस्थितियों से विवश होकर हिजड़ा बनने को विवश हो जाती है। रागिनी चेचक महामारी के फैलने से जहाँ एक तरफ अपनी माँ और भाई को खो देती है, वहीं उसके चेहरे पर बड़े-बड़े चेचक के दाग आ जाते हैं। साथ ही उसकी एक आँख भी चली जाती है। कुछ समय बाद उसके पिता दूसरी शादी कर, उसे शहर में बहन-जीजा के पास भेज देते हैं। जीजा पढ़ाई के खर्चे के बदले में उसका शारीरिक शोषण करता है। कालेज में अपनी ही सहेली द्वारा जब उसका मज़ाक उड़ाया जाता है तो- ''रागिनी की घायल हृदय और पनीली हो गई कानी आँख से उसे असहाय, उपालंभ देती हुई घूर रही थी। मुझे अचानक अपनी गाय की याद आ गई जिसकी पूँछ के नीचे कीड़े पड़ गए थे और दर्द के कारण मक्खियों व पक्षियों को उड़ा नहीं पाती थी। उसकी आँखों की मूक वेदना रागिनी की आँखों में उतर आई थी। मुझे दोनों की बेचारगी व छटपटाहट एक जैसी लगी।''

किरन सिंह द्वारा रचित कहानी 'संझा' किन्नरों के प्रति समाज की नकारात्मक सोच के कारण 'संझा' से जुड़े लोगों की ज़िन्दगी भी नर्क बन जाने की कथा है। वर्षाेंं बाद वैद-वैदाइन के घर संतान का जन्म होता है, वह भी किन्नर। वैद जी पूरा जीवन समाज की नजरों से संझा को बचाने का प्रयास करते हैं। घर को कैदखाना बना देते हैं। बेटी की चिन्ता मंे घुलते-घुलते वैदाइन मौत के मुँह में चली जाती हैं, अकेले वैद जी

दुनिया समाज की नज़रों से संझा को बचाते हुए समय आने पर दबाव के कारण एक नपुंसक पुरूष 'कनाई' से संझा को ब्याह देते हैं। संझा भी वैघकी जानती है, जिससे वह अपने पति व आस-पास के गाँव के लोगों का ईलाज भी करती है। कुछ समय बाद उसकी सच्चाई जब सबके सामने आती है तो लोग उसे समाज से बहिष्कृत करने का प्रयास करते हैं, परन्तु वह अपने आत्म सम्मान के लिए डट कर खड़ी हो जाती है। अन्त में लोगों को उसकी बाउदी की गद्दी पर बैठाने के लिए विवश होना पड़ता है।

किन्नरों पर अक्सर यह आरोप लगता रहता है कि वे जबरन सामान्य 'मनुष्यों' को पकड़कर हिजड़ा बना देते हैं। पद्मा शर्मा रचित कहानी 'इज्जत के रहबर' का यही केन्द्रीय कथ्य है। कहानी के मूल में किन्नरों का अपमान व शोषण है। सोफिया हिजड़ा का सम्बन्ध लालजी के परिवार से बड़ा ही नज़दीकी है। उनकी बेटी प्रतिभा का बलात्कार एक गुंडे द्वारा कर दिये जाने पर श्रीलाल जी तो इज्जत के डर से किसी से कुछ नहीं कहते परन्तु सोफिया उस गुंडे को नपुंसक बना देती है।

अंजना वर्मा की कहानी 'कौन तार से बीनी चदरिया' भी किन्नर विमर्श पर आधारित है। यह ईश्वर से एक प्रकार का प्रश्न है सुन्दरी का जो जानना चाहती है कि उसने कौन सा अपराध किया जो उसे इस हिजड़ा योनि में जन्म मिला।

ललित शर्मा की 'कहानी' रतियावन की चेली' किन्नरों को जबरन उनके परिवार से छीन लिए जाने की कहानी है। पार्वती के विषय में जानने के बाद रतियावन गुरू द्वारा उसे जबरन उसके परिवार से ले जाकर उसे प्रताड़ित किया जाता है। बदमाश हिज़ड़ों द्वारा मार-पीट कर उसे नेग मांगने के लिए मजबूर किया जाता है।

चाँद दीपिका की कहानी 'खुश रहो क्लिनिक' ऐसे संघर्षशील किन्नर की कथा है, जो अपने परिश्रम व ज़िद के बल पर डॉक्टर बनता है और पारम्परिक नाचने-गाने व भीख मांगने के पेशे को लात मार देता है।

विजेन्द्र प्रताप सिंह ने 'संकल्प' कहानी के माध्यम से ऐसे हिज़ड़े को केन्द्रीय पात्र बनाया है, जो अपने परिवार का सहारा बनता है। माधुरी हिजड़ा के रूप में ही पैदा होती है, उसके सात वर्ष का होते-होते सर से माँ का साया हमेशा के लिए उठ जाता है, पिता मानसिक संतुलन खो देते हैं और गोद में रह जाती है नवजात बहन। ऐसे में माधुरी अपने समुदाय में सम्मिलित होकर मधुर बन जाती है और अपने परिवार के पालन-पोषण का भार वहन करती है।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में कहानियों ने किन्नरों के शोषण, तिरस्कार, अपमान, बहिष्कार व सामाजिक निर्ममता को जो स्वर प्रदान किया है वह अपने आप में अविस्मरणीय है।

मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी: बदलाव के पदचिन्ह, 2015 में प्रकाशित लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा है। लक्ष्मी के स्वयं के शब्दों में- ''मुझे प्रोग्रेसिव हिजड़ा होना है- और सिर्फ मैं ही नहीं अपनी पूरी कम्यूनिटी को मुझे प्रोग्रेसिव बनाना है.....।'' यह एक प्रगतिशील सोच वाले परिवार में जन्में हिजड़े की कथा है। जहाँ समाज के विरोध में स्वयं लक्ष्मी का पिता ढ़ाल बनकर खड़ा होता है- '' अपने ही बेटे को मैं घर से बाहर क्यूँ निकालूँ? में बाप हूँ उसका, मुझ पर जिम्मेदारी है उसकी और ऐसा किसी के भी घर में हो सकता है। ऐसे लड़कों को घर से बाहर निकालकर क्या मिलेगा? उनके सामने तो हम फिर भीख मांगने के अलावा और कोई रास्ता ही नहीं छोड़ते हैं।''

लक्ष्मी एक लड़के के रूप में अपने घर में जन्म लेता है लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है उसमें स्त्रैण स्वभाव का विकास होता है। अन्ततः उसे एहसास होता है कि वह स्त्री या पुरूष किसी भी रूप में पूर्ण नहीं है, बल्कि वह किन्नर है। वह स्वयं किन्नर समाज में चला जाता है, परन्तु किन्नरों की यह मान्यता कि परिवार से सारे सम्बन्धों का परित्याग कर दो, वह नहीं मानता। पहले की तरह ही वह अपने घर आता-जाता रहता है।

लक्ष्मी नाचने गाने के स्थान पर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान बनाती है। वह अपने गुरू के हर उस आदेश को मानने से इन्कार कर देती है जो उसके समाज की प्रगति में रोड़ा लगाते हैं। लक्ष्मी अपने कई 'साथियों' के साथ मिलकर 'दाई वेलफेयर सोसायटी' के अन्तर्गत काम करना शुरू करती है, जो हिजड़ों के द्वारा हिजड़ों के लिए ही शुरू की गई संस्था है। लक्ष्मी के हिजड़ों के हित में किए गए प्रयासों का परिणाम भी अंततः सामने आता है- ''बस्ती के हिजड़ों को अच्छा लगता था। उनके स्वास्थ्य के बारे में, उनकी ज़िन्दगी के बारे में कोई फिक्र कर रहा है, यही उनके लिए काफी बड़ी बात थी पर हिजड़ा कम्यूनिटी के मुखिया, नायकों का इसको लेकर विरोध था।..... पर खुद काम करने वाले हिजड़े अब हमें बहुत अच्छा रिस्पांस देने लगे थे।''

किन्नर समुदाय समाज बहिष्कार के विषैले दंश को झेलने के लिए अभिशप्त होता है। यह समुदाय वास्तव में जैविक अनिश्चितता के कारण अस्तित्व में आया। यह यौनिक विकलांगता के साथ-साथ अक्सर देह व अंतःकरण के तालमेल में कमी का परिणाम भी हैं। शरीर और मन की इस विसंगति के कारण किन्नरों

के जीवन में भी बहुत सारी विसंगतियां आ जाती हैं। इसका साक्षात्कार हम प्रथम ट्रांसजेंडर प्रिंसिपल मानोबी बंद्योपाध्याय की बांग्ला से हिन्दी में अनूदित किन्नर आत्मकथा 'पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन में' करते हैं। यह आत्मकथा 2018 में राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित की गयी। मानोबी बताती है कि वे उच्च वर्ग परिवार में बेटे के रूप में जन्मी, परन्तु जैसे-जैसे वे बड़ी होती गयी परिवारीजनों और स्वयं उन्हें भी अपने 'स्त्रैण' स्वभाव का आभास होने लगा उन्होंने शल्यचिकित्सा का सहारा लेने का निश्चय किया। अपने इस फैसले के कारण उन्हें घोर अपमान व यातना झेलनी पड़ी। परन्तु वह दुनिया-समाज व परिस्थितियों से डट कर लड़ी। अपना लिंग परिवर्तन करा कर 'सोमनाथ' से मानोबी बनीं। परिवार के साथ और अपने आत्मबल के आधार पर अपनी उच्च शिक्षा पूर्ण की। इन्होंने बांग्ला साहित्य में एम.ए., एम.फिल और पी.एच-डी. की उपाधियाँ ग्रहण की और अंततः पं॰ बंगाल के एक कालेज में भारत की प्रथम ट्रांसजजेंडर प्रिंसिपल बन कर महान उपलब्धि हासिल की। अपनी आत्मकथा उन्होंने ऐसे ही लोगों को समर्पित करते हुए लिखी हैं, जिन्होंने उनका तिरस्कार किया। यह समर्पण वक्तव्य अपने आप में व्यंग्य है, उन समाज के ठेकेदारों पर जो लिंग विकलांग मनुष्यों को जीने का अधिकार भी नहीं देना चाहते।

मानोबी लिखती हैं- "उन सबके नाम, जिन्होंने मुझे अपमानित किया और अवमानव कह कर जीवन के हाशिये पर धकेल दिया। उन्हीं के कारण मुझे लड़ने की ताकत मिली और मैं जीवन में आगे बढ़ पायी। आशा करती हूँ कि पुस्तक मुझ जैसों के लिए प्रेरणात्मक सिद्ध होगी और वे भी जीवन में सफल हो पायेंगे।"

नीरजा माधव के यमदीप (2002) उपन्यास में पहली बार किन्नरों को केन्द्र में रखकर कथा का सूत्र गढ़ा गया। लेखिका ने किन्नर समुदाय को उस दीप की उपमा दी है जो दीपावली के शुभ अवसर के ठीक एक दिन पहले यम के दीप के रूप में घर से निकालकर घूरे पर रख दिया जाता है और घर के लोग फिर पलटकर उस दीप को नहीं देखते, क्योंकि यह अपशकुन माना जाता है। बिल्कुल यही घटित होता है, नन्दरानी उर्फ नाज़बीबी के साथ उपन्यास के प्रारम्भ में एक पागल औरत द्वारा किन्नरों के सहयोग से बच्ची को जन्म दिया जाता है। उसे जन्म देते ही औरत मर जाती है। बच्ची को जब कोई सामान्य व्यक्ति सहारा देने को तैयार नहीं होता तो नाज़बीबी, जो कि एक किन्नर है, उसे पालने का फैसला लेती है। उसके बड़े होने पर उसकी पढ़ाई की अच्छी व्यवस्था करती है। उसी बच्ची के लिए कितने ही समझौते करती है। खुद एक पुलिस वाले की 'गिरिया' (रखैल) बनकर रहने को राजी हो जाती है, परन्तु अपना और सोना का सम्बन्ध पूरी दुनिया से छुपा कर रखती है, जिससे सोना को किसी परेशानी का सामना न करना पड़े।

विभिन्न घटनाक्रमों के माध्यम से किन्नर समुदाय इस उपन्यास में अपनी ईमानदारी व कर्तव्यपरायणता के माध्यम से मानव समाज की बदसलूकियों का डटकर जवाब देता दिखाई देता है।

स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ॰ अनुसूया त्यागी का उपन्यास 'मैं भी औरत हूँ' (2005) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें दो जुड़वॉ बहनों-रोशनी और मंजुला की कथा है। इनकी शारीरिक संरचना से अनभिज्ञ इनके परिवार को लम्बे समय तक एहसास ही नहीं होता कि ये दोनों सामान्य लड़की नहीं, बल्कि किन्नर हैं।

''रोशनी काँप उठी तब क्या उस लड़के ने जो कहा था वह सच है, वह लड़की नहीं है, वह औरत नहीं है, तब फिर मैं क्या हूँ..... क्यों इसीलिए मुझे माहवारी प्रारम्भ नहीं हुई? क्या मेरी शादी नहीं हो पायेगी? क्या मैं कभी माँ नहीं बन पाऊँगी? ओह क्या मैं 'नपुंसक हूँ पर फिर मेरी ऊपरी बनावट स्तन आदि तो ठीक हैं, पर अन्दर कुछ ठीक नहीं है, यह सब मुझे कौन बताएगा''?

घर वालों को पता चलने पर दोनांे बहनों का ऑपरेशन करवाया जाता है, जिनमें से एक तो पूर्ण औरत बन जाती है, लेकिन दूसरी नपुंसक ही रह जाती है, क्योंकि रोशनी के शरीर में गर्भाशय ही नहीं था। मंजुला आगे चलकर सामान्य महिला का जीवन जीने लगती है, यहाँ तक कि वह संतानोत्पत्ति में भी सक्षम होती है।

रोशनी का विवाह ओंकार से होता है। कई नाटकीय घटनाक्रम के बाद रोशनी का जीवन भी पटरी पर आ ही जाती है। यह उपन्यास सन्देश है इस समाज और उन माता - पिता के लिए जो बच्चे के किन्नर होने पर उसकी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ लेते हैं।

रोशनी और मंजुला के पिता मध्यवर्ग और ग्रामीण परिवेश से सम्बद्ध हैं, लेकिन फिर भी वे बेटियों के विषय में जानने के बाद सूझ-बूझ से काम लेते हुए उनका ऑपरेशन करवा कर उन्हें सामान्य जीवन देने के साथ-साथ उन्हें उच्च शिक्षा भी दिलवाते हैं। रोशनी एक बड़ी कम्पनी की सीईओ तक बन जाती है। किन्नरों की दयनीय स्थिति की जिम्मेदारी काफी कुछ उनके परिवार की ही होती है। जिसे घरवाले नहीं अपनाना चाहते, उसे समाज क्यों अपनाएगा भला?

तीसरी ताली (2010) उपन्यास के लिए वर्ष 2012 में लेखक प्रदीप सौरभ को 18वां अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान, यू॰के॰ द्वारा सम्मानित किया गया है। किन्नरों पर आधारित यह उपन्यास लेखक का साहसिक कदम माना जा सकता है, जिसमें किन्नरों के अकेलेपन, अलगाव, समाज द्वारा बहिष्कार, तिरस्कार व निर्मम

यातना की कथा है। सुधीश पचौरी के शब्दों में - ''यह उभयलिंगी सामाजिक दुनिया के बीच और बरक्स हिजड़ों, लौड़ों, लौंडेबाजों, लेस्बियनों और विकृत-प्रकृति की ऐसी दुनिया है जो हर शहर में मौजूद है और समाज के हाशिये पर जिन्दगी जीती रहती है।''

प्रदीप सौरभ ने अपने पत्रकार जीवन द्वारा मिले किन्नरों के जीवनानुभव को उपन्यास की शक्ल दी है। यह उपन्यास वास्तव में किन्नरों के विविध प्रकारों की केस स्टडी जैसा है। तीन बेटियों के बाद घर में जन्में बेटे के जननांग को देखकर गौतम साहब का सारा उत्साह जाता रहता है। कितने ही डाक्टरों के चक्कर लगाये, परन्तु निराशा ही हाथ लगी। विनीत कुछ दिन बाद घर से भागकर हिजड़ा समुदाय में शामिल हो जाता है। आनंदी आंटी लाख प्रयास करती है अपनी किन्नर बेटी निकिता को दुनिया-समाज से बचाने की, परन्तु अंततः सबसे हार कर वह नीलम गुरू को बुलाती है और निकिता को उसके हवाले कर देती है। बाद में परिस्थितियों के दबाव से हार कर निकिता आत्महत्या कर लेती है। किन्नर रूप में जन्मी मणिकलिता को देखकर उसकी मां आत्महत्या कर लेती है। कुछ वर्षों बाद उसकी बड़ी बहन के ससुराल वाले यह कहकर उसे घर से निकाल देते हैं कि उसकी बहन किन्नर है। बाद में यही मणिकलिता मणि गंधर्व महाविद्यालय की डांस डायरेक्टर बनकर सफल जीवन जीती है। ज्योति नाम का एक दलित युवक पहले बाबू श्याम सुंदर सिंह का रखैल बनकर रहता है और बाद में उनके द्वारा त्याग दिए जाने पर बार-बार यौन शोषण का शिकार होकर अंततः आजीविका के लिए स्वेच्छा से हिजड़ा बन जाता है। इस उपन्यास के कुछ पात्र 'समलिंगी' भी हैं, जिनमें 'सुविमल बाबू' और यास्मिन जुलेखा प्रमुख हैं। ये पात्र जीवन की विकट परिस्थितियों के विपरीत लिंगी के प्रति विमुख हो जाते हैं। अनिल की तरह कुछ पात्र बायसेक्सुअल भी हैं जो स्त्री और पुरूष दोनों से सम्बन्ध बनाते हैं।

किन्नर कथा (2011) महेन्द्र भीष्म का ऐसा उपन्यास है जो किन्नर जीवन की त्रासदी बयान करने के साथ-साथ किन्नरों और उनके समाज की विभिन्न धार्मिक - सामाजिक मान्यताओं के साथ-साथ उनके वर्गीकरण को भी स्पष्ट करता है। लेखक के ही शब्दों में- ''लिंगोच्छेदन कर बनाये गये हिजड़ों को छिबरा और नकली हिजड़ा बने मर्दों को अबुआ कहते हैं..... हिजड़ों की चार शाखाएं होती हैं..... बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा। ..... बुचरा जन्मजात हिजड़ा होते हैं, नीलिमा स्वयं बने, मनसा स्वेच्छा से शामिल तथा हंसा शारीरिक कमी के कारण बने हिजड़े हैं।

जैतपुर के राजसी घराने में दो जुड़वा लड़कियों का जन्म होता है, जिनमें से एक सोना अविकसित योनी लेकर इस दुनिया में आयी है। प्रारम्भिक के चार वर्षों तक दाई निरंजना तथा माँ आभा सिंह द्वारा

सच्चाई छुपायी जाती है, परन्तु पिता जगतराज को सत्य का ज्ञान होने पर बहुत धक्का लगता है, वह उसे मारने का फैसला सुनाकर दीवान पंचम सिंह को सौंप देते हैं। दीवान उसे मारने के बजाय एक हिजड़ा गुरू तारा को दे देता है। यहाँ उसे सोना से चंदा नाम दे दिया जाता है। सोना को मनीष नामक एक युवक से प्रेम भी होता है, जो अपने आप में अलौकिक है। समयान्तराल में सोना को अपनी ही बहन रूपा के विवाह में नाचने-गाने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जहाँ उसकी माँ उसे सहर्ष स्वीकार कर अपनी समधन से सारी सच्चाई बयान कर देतीहैं। समधन भी विशाल हृदय की महिला है वह अंततः सोना का इलाज करवाने के लिए उसे लेकर कनाडा चली जाती है।

इस उपन्यास की पूरी कथा भले ही यथार्थ से कोसो दूर हो परन्तु किन्नर जीवन की यह सुखद परिणति आशान्वित तो करती ही है। इस उपन्यास की एक और महत्वपूर्ण पात्र तारा गुरू है, जो अपनी किशोरवय में हिजड़ा समाज में आयी थी। वह जब तक अपने माता-पिता के संरक्षण में थी किन्तु चौदह वर्ष की आयु हो जाने पर उसके भाई द्वारा उसे घर से बहिष्कृत कर दिया जाता है। अपनी माँ को याद करते हुए तारा सोचती है- "प्रत्येक किन्नर अभिशप्त हैं। अपने परिवार से बिछुड़ने के दंश से समाज का पहला घाट यहीं से शुरू होता है। अपने ही परिवार से, अपने ही लोगों द्वारा उसे अपनों से दूर किया जाता है। परिवार से विस्थापन का दंश सर्वप्रथम उन्हें ही भुगतना होता है।"

गुलाम मंडी (2013) निर्मला भुराड़िया द्वारा रचित ऐसा उपन्यास है जो किन्नरों पर इस समाज द्वारा किए जाने वाले निर्मम अत्याचारों की लम्बी फेहरिस्त हमारे सामने रखता है। पहले समाज में इस वर्ग को सबसे ज्यादा तिरस्कृत किया जाता है और उसके बाद जिस्म फरोशी के लिए विवश कर उनकी तस्करी भी की जाती है। यह उपन्यास कई कहानियों के सम्मिश्रण से बना है, इन कहानियों का अपना अलग अस्तित्व तो है ही साथ ही ये आपस में एक दूसरे से भी जुड़ी हुई हैं। लेखिका के अनुसार- "बचपन से ही देखती आई हूँ उन लोगों के प्रति समाज के तिरस्कार को जिन्हें प्रकृति ने तयशुदा जेंडर नहीं दिया। इसमें उनका क्या दोष? ये क्यों हमेशा त्यागे गए, दुरदुराए गए, सताए गए, अपमान के भागी बने? ..... आखिर ये बाकी इन्सानों की तरह मानवीय गरिमा के हकदार क्यों नहीं?"

वास्तव में यह उपन्यास देह व्यापार व मानव तरक्की पर आधारित है। इस उपन्यास का नाम लैटिन अमेरिका की दास प्रथा की याद दिलाता है। पहले यह सब खुल कर होता था आज चोरी - छुपे होता है। इस उपन्यास की तीन प्रमुख पात्र हैं- कल्याणी, जानकी उर्फ जेन तथा अंगूरी। कल्याणी जीवन पर्यन्त अपनी

सुन्दरता को बनाए व बचाये रखने के लिए जद्दोजहद करती है। यहाँ तक की अपनी इस सोच की गुलाम बनकर वह जमनालाल से सांप का दंश लेने भी पहुँच जाती है।

लक्ष्मी और जानकी का पिता हाथी के बदले अपनी बड़ी बेटी को बेच देता है। जानकी अमेरिका पहुँच जाती है व यौन कर्म के लिए मजबूर कर दी जाती है। जानकी के साथ ही हम देखते हैं उन जगहों पर अन्य लड़कियों व छोटी बच्चियों को भी तस्करी के लिए लाया जाता है।

अंगूरी एक हिजड़ा है, जो व्यंग्य करते हुए कहती है- "स्वारथ रहता है न तुम्हारा। आडे दिन में जो कहीं कव्वा आकर बैठ जाए न तुम पर, तो नहा ओगी-धोओगी अपशकुन मनाओगी। जैसे हम ना तुम्हारे जो तो शादी-व्याह हो तो नाचेगी गाएगी, शगुन पाएगी, मगर यूं जो रास्ते में आ पड़ी ना हम, तो हिजड़ा कहकर धिक्कारोंगी।" इस प्रकार अंगूरी इस पूरे समाज की स्वार्थपरता पर निशाना साधती है।

इस उपन्यास में एक दस वर्षीय बच्चा 'मुत्थू' भी है जो बाल यौन शोषण के कारण एड्स का शिकार हो जाता है। वास्तव में 25 छोटे-छोटे खण्डों में बंटा यह एक समस्या प्रधान उपन्यास है।

'मैं पायल' (2016) महेन्द्र भीष्म द्वारा आत्मकथात्मक शैली में लिखा उपन्यास पायल के जन्म से ही शुरू होता है। महानगर के नज़दीकी कस्बे में निम्न मध्य वर्ग में एक गुस्सैल, शराबी व क्रूर पिता के घर में चौथी लड़की के रूप में पायल का जन्म होता है। जिसके बाद शुरू होता है प्रताड़ना का एक लम्बा दौर जिसमें पिता द्वारा पायल को मारने पीटने से लेकर फाँसी देने का प्रयास भी शामिल था। अपने हिजड़ा होने का बोध भी पायल को अपने पिता द्वारा ही हुआ था- "हिजड़ा यह शब्द सबसे पहले मैंने उन्हीं के मुख से सुना था, पर तब मैं इस शब्द के मायने से बिल्कुल अनभिज्ञ थी..... बस इतना ही समझती थी कि 'हिजड़ा' भी गाली के रूप में प्रयोग में लाया जाने वाला कोई शब्द होगा।"

पिता द्वारा बार-बार की मार से तंग आकर पायल घर से भाग जाती है। उसके पिता चाहते थे कि वह लड़कों की तरह रहे जिससे लोग किसी तरह का सवाल न करें, परन्तु पायल को लड़की बनकर रहना अच्छा लगता था। घर से भाग कर बाहरी दुनिया में निकलने पर उसे एहसास होता है कि इस समाज में औरत होकर रहना भी कम जोखिम का काम नहीं है।

आगे के कथानक में पायल के विषय में जानकारी मिलने पर लखनऊ के हिजड़े उसे अपहृत कर नाचने-गाने व बधाई मांगने पर विवश करते हैं। वहाँ भी पायल को मारा-पीटा जाता है और कई दिनों तक बिना भोजन के रखा जाता है। अपने अकेलेपन में पायल ईश्वर से ही सवाल कर बैठती है- "मैं हृदय में

बहुत कुछ जज़्ब किये मन ही मन रोती रहती थी और ईश्वर से एकांत के क्षणों में अपने अपराध के लिए पूछती रहती थी, हे ईश्वर! ऐसा कौन सा पाप मैंने किया जो तूने मुझे इस जीवन में हिजड़ा रूप दिया।" अपनी परस्थितियों को स्वीकार करने के अतिरिक्त पायल के सामने दूसरा रास्ता न था। बाद में यही पायल गुरू के पद पर स्थापित होती है।

पोस्ट बॉक्स नं॰-203 नाला सोपारा (2016) चित्रा मुद्गल रचित, बहुचर्चित साहित्य अकादमी 2018 से पुरस्कृत पत्रात्मक शैली में लिखा उपन्यास है, जिसमें विनोद उर्फ बिन्नी केवल प्रगतिशील सोच का किन्नर ही नहीं है अपितु आत्म विकास के साथ-साथ अपने समुदाय के विकास के लिए भी भरपूर प्रयासरत व्यक्ति है। पाठकों को उपन्यास के सम्पूर्ण कथानक का ज्ञान माँ-बेटे के पत्रों से होता है। विनोद तीन भाईयों में मंझला है। एक लम्बे समय तक माता-पिता विनोद की सच्चाई समाज से छुपा कर रखते हैं, लेकिन ज्यों ही किन्नरों को विनोद के विषय में पता चलता है, वे जबरन उसे अपने साथ ले जाते हैं। विनोद पढ़ा लिखा है वह नाच-गा कर कमाने से इन्कार कर देता है। एक नेता के यहाँ पी॰ए॰ के हैसियत से काम करता है। धीरे-धीरे अपने सद्व्यवहार व कार्य कुशलता के कारण विनोद का अपने कार्य क्षेत्र में कद बढ़ता है। वह चुनाव के दिनों में सम्पूर्ण किन्नर समाज को सम्बोधित करके भाषण भी देता है, जिससे इन किन्नरों में नवचेतना जागृत होती है।

सब कुछ सही ही जा रहा था कि एक अनचाही घटना सब समाप्त कर देती है। पूनम जोशी नामक एक किन्नर का बलात्कार नेता जी का बेटा अपने दोस्तों के साथ मिलकर कर देता है। विनोद किसी भी तरह समझौते के लिए राज़ी नहीं होता और दोषियों को सज़ा दिलाने की बात करता है, जिसके कारण उसकी हत्या कर दी जाती है।

पूरा उपन्यास किन्नरों की सामाजिक स्वीकृति व घर वापसी को केन्द्रित कर के लिखा गया है। सारी योग्यताओं के बावजूद विनोद की घर वापसी के समय ही हत्या पूरे समाज पर प्रश्नचिन्ह लगाता है कि क्या लेखिका की सोच सार्थक हो सकती है?

भगवंत अनमोल द्वारा 2017 में रचित उपन्यास 'जिन्दगी 50-50' किन्नरों के साथ किए जा रहे दुर्व्यवहार का चित्रण करने के साथ उसका समाधान भी निकाला है। सम्पूर्ण कथा दो पीढ़ियों में विस्तृत है। अनमोल के घर जब उसका पुत्र सूर्या किन्नर के रूप में जन्म लेता है तब अनमोल प्रण करता है कि वह सूर्या के साथ वह सब कुछ नहीं होने देगा जो उसके भाई हर्षा के साथ हुआ। यहाँ से हर्षा उर्फ हर्षिता का परिचय पाठकों के सामने आता है। हर्षा के जन्म से सबसे ज्यादा दुखी उसके बाबू जी होते हैं। गलती चाहे किसी की

भी हो पिटाई हमेशा हर्षा की ही होती है। परिवार और समाज ने मिलकर हर्षा को प्रताड़ित किया यहाँ तक कि जिस स्कूल में वह पढ़ने जाता है वहाँ शिक्षिका द्वारा भी अपमानित किया जाता है। अपने मन की उलझनों को वह किसी के साथ साझा नहीं कर पाता। तब उसके जीवन में अमन आता है, जिसके साथ वह अपने सुख-दुख बाँटता है। अमन ही उसे स्पष्ट रूप से बताता है कि वह किन्नर है। एक बार स्कूल से घर आते हुए रास्ते में उसका बलात्कार हो जाता है। वह शारीरिक पीड़ा से कराहते हुए घर पहुँच कर जब अपने पिता को सच्चाई बताता है तो वह इतनी बेरहमी से उसे पीटते हैं कि हर्षा अन्दर तक टूट जाता है। वह घर से भाग कर किन्नर समाज में सम्मिलित हो जाता है।

वहाँ पहुँचकर उसे इस समाज की सच्चाई का पता चलता है कि नाच-गाने के साथ किन्नर जीवन यापन के लिए देह व्यापार भी करते हैं। पहले उसे यह सब घृणित लगता है। जब उसे पुस्तैनी जमीन-जायदाद के बिकने की नौबत आने पर पिता की बीमारी और मरणासन्न अवस्था का पता चलता है, तो वह स्वयं देह व्यापार के दलदल में उतर जाता है। पाँच लाख की बड़ी रकम तो जुटा लेता है परन्तु साथ ही एड्स की सौगात भी उसे मिल जाती है। हर्षा उर्फ हर्षिता अंततः आत्महत्या का निर्णय लेती हैं। अपने अन्तिम समय में वह इस समाज से प्रश्न पूछती है- ''किन्नर होना इतना बड़ा अभिशाप क्यों है? बस मेरा अधूरापन ही तो न? कैसे-कैसे पल आये! इस शरीर ने सब भुगता, सब सहा। जिस शरीर का लोग मजाक उड़ाते हैं, उसे ही रात को मन बहलाने का जरिया बना लेते हैं। मेरे शारीरिक अस्तित्व में दुहरापन है लेकिन उस तथाकथित समाज के व्यक्तित्व के दुहरेपन पर मैं थूकती हूँ।''

इस उपन्यास में किन्नर समाज के प्रति दो पीढ़ियों के चिंतन में बदलाव ने एक आशा की किरण दिखाई है। अनमोल अपने बेटे सूर्या के किन्नर होने में किसी प्रकार की शर्मिंदगी महसूस नहीं करता। वह उसके जन्मदिन पर भव्य पार्टी का आयोजन करता है, साथ ही प्रण लेता है कि जो कुछ उसके भाई के साथ हुआ वह अपने बेटे के साथ नहीं होने देगा।

15 अप्रैल 2014 को न्यायमूर्ति ए॰के॰ सीकरी और के॰एस॰ राधाकृष्णन की पीठ ने 'नालसा बनाम भारत' संघ के वाद में एक युगांतकारी निर्णय दिया, जिनमें हिजड़ा समुदाय के मौलिक अधिकारों की रक्षा करते हुए उन्हें तृतीय लिंगी के रूप में मान्यता प्रदान की और चार बिन्दुओं पर बल दिया-

1. हिजड़ों के प्रति मानसिकता बदलने की जरूरत है।

2. हिजड़ों के प्रति समाज में मानवीय दृष्टिकोण का विकसित होना जरूरी है।

3. तृतीय लिंगियों की सुरक्षा के लिए उन्हें अधिकार दिए जाने जरूरी है।

4. सुविधानुसार स्त्री या पुरूष के रूप में पहचान बनाने की स्वतंत्रता दी जाये।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, 'ट्रांसजेंडर' एक अम्ब्रेला टर्म है, जिसमें वे सभी लोग शामिल हैं, जनकी लिंग की अनुभूति जन्म के समय उन्हें नियत किये गए लिंग से मेल नहीं खाती। उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले के कारण अब किन्नर समुदाय को नयी पहचान मिली है और उनके लिए आशा का सूर्य उदित हुआ है। कोर्ट ने स्पष्ट आदेश दिया है कि हर सरकारी दस्तावेज़ में महिला और पुरूष के साथ एक कालम थर्ड जेंडर या किन्नर का भी हो। किन्नरों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सभी सरकारी व गैर सरकारी संगठनों, समुदायों व शिक्षण संस्थानों तथा प्रत्येक व्यक्ति के सहायोग की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन- से॰ डा॰ दिलीप मेहरा, वाणी प्रकाशन।

2. किन्नर विमर्श: दशा और दिशा - डॉ॰ विनय कुमार पाठक।

3. इक्कसवीं सदी का नव्य विमर्श: किन्नर विमर्श - डा॰ रेखा दुबे।

4. किन्नर विमर्श साहित्य के आइने में - डॉ॰ इकरार अहमद।

5. किन्नर विमर्श: साहित्य और समाज - सं॰ मिलन बिश्नोई।

6. मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी: बदलाव के पदचिन्ह - लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन (2015)।

7. पुरूष तन में फंसा मेरा नारी मन- मानोबी बंधोपाध्याय, राजपाल एण्ड सन्स 2018।

8. यमदीप-नीरज माधव, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली 2002।

9. तीसरी ताली- प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाश, 2010।

10. किन्नर कथा- महेन्द्र भीष्म, अमन प्रकाशन, कानपुर 2020।

11. गुलाम मंडी- निर्मला भुराड़िया, सामयिक प्रकाशन 2013।

12. मैं पायल - महेन्द्र भीष्म, अमन प्रकाशन, कानपुर 2016

13. मैं भी औरत हूँ - डा॰ अनुसूया त्यागी, परमेश्वरी प्रकाशन 2008।

14. थर्ड जेन्डर: हिन्दी कहानियाँ - सं॰ डा॰ एम फिरोज खान, बाड्.मय पत्रिका।

15. पोस्ट बॉक्स नं-203: नाला सोपारा- चित्रा मुद्गल, 2016, सामयिक पेपर बैक्स।

16. अस्तित्व- गिरिजा भारतीय, विकास प्रकाशन, 2018।

17. ज़िदगी 50-50 - भगवंत अनमोल, राजपाल एण्ड सन्स, 2017।